सखी री जान बूझ क्यों

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।।

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान।।

एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़।।

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसों भई ना रंग रस।।

कैयों खोया जनम अपना, रहे धनी के जमाने मांहें।
हाए हाए कहा कहूं मैं तिनको, जो इनमें से निरफल जाए।।

दुख माया धनीपें मांग के, हम आए जिमी इन।
सो छल सरूप अपनो देखावहीं, तो भी भूलें नहीं सोहागिन।।